International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018
Website-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

रवि बोखारे
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. आलोक शर्मा
प्राचार्य, आयुषमति कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल

प्रस्तुत शोधपत्र में म.प्र. राज्य के बैतूल जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया है। न्यादर्श के रूप में 100 शिक्षकों (50 पुरूष एवं 50 महिला) का चयन कर उन पर डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की 'शिक्षण प्रभावशीलता मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार पुरूष एवं महिला शिक्षकों शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक एवं व्यक्तित्व घटकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक घटकों में सार्थक अंतर पाया गया।

शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है, अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है, अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है। **हुमायूँ कबीर**

वर्षों से प्रभावशाली शिक्षक अथवा शिक्षण कुशलता को समझने व परिभाषित करने का प्रयास किया जा रहा है। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षण प्रभावशीलता की परिभाषा अपने–अपने दृष्टि कोण से दी है। शिक्षक प्रभाव संबंधी यह भिन्नता तथा अस्पष्टता स्वभाविक है, क्योकि प्रभावशाली शिक्षण निःसंदेह एक सापेक्षिक विषय है। किसी भी व्यक्ति के लिये एक अच्छे व कुशल शिक्षक का विचार उसके पूर्व अनुभव, मूल्य, अभिवृत्ति तथा समाज की परिस्थितियों से प्रभावित होता है। शिक्षक का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाकर विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, रूचि आदि का विकास करना है, तभी विद्यार्थियों का विकास संभव है। शिक्षक जब कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाता है तो उसके सम्मुख कुछ उद्देश्य व कुछ लक्ष्य होते हैं, इन उद्देश्यों व लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास वह निरंतर करता रहता है, जिस सीमा तक वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो जाता है वह उसकी कुशलता व प्रभावशीलता का परिचायक है। इसी को स्पष्ट करते हुए रेयन्स (1970) ने कहा है कि ''शिक्षक उसी सीमा तक प्रभावशाली है, जिस सीमा तक शिक्षक की क्रियाएँ छात्रों के आधारभूत कौशल, अवधारणा, कार्य

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

करने की आदत, वांछित अभिवृत्ति, मूल्य निर्णय तथा पर्याप्त व्यैक्तिक समायोजन पैदा करने के लिये अनुकूल है।''

राष्ट्र निर्माण के महत्वपूर्ण पक्ष में पूर्ण उत्तर दायित्व के लिए 'विद्यालय' का नाम ही आता है। किसी विद्यालय की प्रभावशीलता मुख्य रूप से उसके अध्यापक पर ही निर्भर है और अच्छे विद्यालय में प्रमुख रूप से अध्यापक के गुणों का ही मूल्याकंन होता है। अतः राष्ट्र के विकास हेतु एवं उत्तम विद्यालयीन वातावरण के लिए किसी भी विषय के शिक्षण को भय मुक्त तथा रूचि पूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि अध्यापक का शिक्षण प्रभावशाली हो। जब तक अध्यापक का शिक्षण प्रभावशाली नहीं होगा तब तक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं बोधगम्य नही बनाया जा सकता। शिक्षक का महत्व संमाज तथा शिक्षा पद्धति दोनों मे ही स्पष्ट है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है। अतः उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए पुरूष एवं महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना बहुत ही सामयिक प्रतीत हो रहा है।

शिक्षक प्रभावशलीता से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोधकार्य हुये है। **श्रीवास्तव, मधुबाला (1989)** ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रशिक्षण के उपरान्त पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण निपुणता, महिला प्रशिक्षणार्थियों से बेहतर पायी गई। **रेडडी, आदिनारायण पी. (1990)** ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला प्रशिक्षक, पुरूष प्रशिक्षकों की तुलना में अधिक प्रभावशाली पाई गयी। **मौर्य, एच.सी. (1990)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ शिक्षकों की प्रभावशीलता तथा समायोजन में लिंग भिन्नता पाई गयी। **दोषी, प्रवीण (2004)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता महिला शिक्षकों से अधिक पाई गई। **बासु, सरस (2010)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरूष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, पुरूष शिक्षकों की तुलना में उच्च पाई गई। **खातून, सालेहा (2011)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया।

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों में सार्थक अंतर नहीं है।

उपकरण :–

शिक्षक प्रभावशीलता मापनी – डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा

विधि :–

सर्वप्रथम बैतूल जिले में स्थित शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों में कार्यरत 100 शिक्षकों (50 पुरूष एवं 50 महिला) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' का प्रशासन किया गया तथा इस मापनी में दिये गये सभी घटकों का अलग–अलग फलांकन किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

तालिका क्रमांक 01

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष शिक्षक	50	272.36	21.35	0.49	> 0.05
महिला शिक्षक	50	270.48	17.03		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.49 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम है।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका क्रमांक 02

निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षण प्रभावशीलता के घटक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
शैक्षणिक	पुरूष शिक्षक	50	55.98	9.96	1.03	> 0.05
	महिला शिक्षक	50	54.14	7.64		
व्यावसायिक	पुरूष शिक्षक	50	50.32	6.76	2.14	< 0.05
	महिला शिक्षक	50	47.24	7.64		
सामाजिक	पुरूष शिक्षक	50	47.42	7.35	2.27	< 0.05
	महिला शिक्षक	50	44.14	7.09		
संवेगात्मक	पुरूष शिक्षक	50	33.04	6.17	3.44	< 0.01
	महिला शिक्षक	50	37.86	7.74		
नैतिक	पुरूष शिक्षक	50	38.34	6.95	2.21	< 0.05
	महिला शिक्षक	50	41.18	5.85		
व्यक्तित्व	पुरूष शिक्षक	50	47.26	6.33	1.01	> 0.05
	महिला शिक्षक	50	45.92	6.93		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98
0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक एवं व्यक्तित्व घटकों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इन घटकों के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.03, 1.01 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम हैं जबकि व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक घटकों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इन घटकों के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.14, 2.27, 3.44, 2.21 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05, 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98, 2.63 से अधिक हैं।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक एवं व्यक्तित्व घटकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक घटकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता के व्यावसायिक एवं सामाजिक घटक, महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च पाए गये जबकि महिला शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता के संवेगात्मक एवं नैतिक घटक पुरूष शिक्षकों की तुलना में उच्च पाए गये।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक एवं व्यक्तित्व घटकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक घटकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता के व्यावसायिक एवं सामाजिक घटक, महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च पाए गये जबकि महिला शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता के संवेगात्मक एवं नैतिक घटक पुरूष शिक्षकों की तुलना में उच्च पाए गये।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. अग्रवाल, जे.सी (1972) **विद्यालय प्रशासन**, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली
2. भाई, योगेन्द्रजीत (1974) **शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (1958) **जनतन्त्रात्मक विद्यालय संगठन**, भारत पब्लिकेशन आगरा
4. प्रसाद, केशव (नवीन संस्करण) **विद्यालय व्यवस्था**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. शर्मा, आर.ए. (1995) **शिक्षा अनुसंधान**, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
6. शर्मा, आर.ए. (2001) **विद्यालय संगठन तथा शिक्षा प्रशासन**, आर. लाल बुक डिपो मेरठ

Journals :

1. Basu, Saras (2010) Emational Intetigence and Teacher efffectiveness of secondary school teacher, Indian journal of teacher education anweshka, Vol. 7, June 2010, Page No. 19-24
2. दोषी, प्रवीण (2004) "प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षणप्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", **प्राइमरी शिक्षा,** अप्रैल 2004, पेज 25 से 33

3. Khatoon, Saliha (2011) Emotioanl etetligence effective teaching of D. ED & B. ED level school teachers. The CTE National Journal, Vol. IX, No. 1, Jan.-June 2011, Page No, 64-68
4. Mauya, H.C. (1990) A study of the relationship between teachers attitudes and teacher efficiency of university and pre-university lectures., Ph.D. Psy, Agra Univ., in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1455
5. Reddy, Adinarayan P. (1990) A study of certain socio-psychological factors relating to adult education instructor effectiveness. Ph.D. , Adult Edu, Sri Venkateswara Univ., in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1602-03
6. Srivastava, Madhu Bala (1989) The impact of the teacher education programme of Lucknow University on pupil-teacher's attitude and teaching efficiency. Ph.D. , Edu, Univ. of Lucknow, in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1492-93